RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CLASS 12th | HISTORY

ARJUN BATCH

बंधुत्व जाति तथा वर्ग

Chapter-3 | Part-3



आज क्या पढेंगे ?

1. अभिलेखों से सातवाहन राजाओं के नाम
2. सामाजिक विषमताएँ



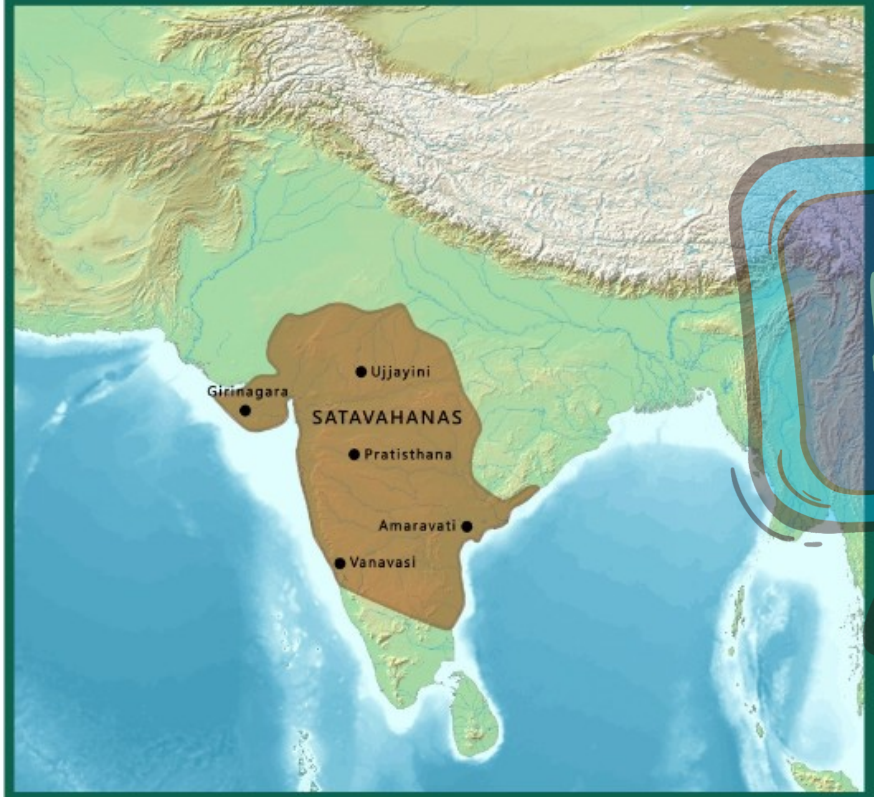
स्त्री के गोत्र → आदि पुरुष



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अभिलेखों से सातवाहन राजाओं के नाम



अभिलेखों से सातवाहन राजाओं की कई पीढ़ियों के नाम प्राप्त हुए हैं। इन सभी नामों में राजा की एक जैसी पदवी है। अगले शब्द का अंत पुत्त से होता है। यह एक प्राकृत शब्द है जिसका अर्थ 'पुत्र' है।

गोतमी और वसिथि स्त्रीवाची नाम हैं गौतम और वशिष्ठ के। ये दोनों वैदिक ऋषि थे जिनके नाम से गोत्र हैं।

राजा गोतमी-पुत्त सिरी-सातिकेनि

राजा वसिथि-पुत्त (सामि) सिरि-पुलुमायि

राजा गोतमी-पुत्त सामि-सिरि-यन-सातकनि

राजा मधारि-पुत्त स्वामि-सकसेन

राजा हरिति-पुत्त चत्तरपन-सातकनि

राजा हरिति-पुत्त विनहुकद चतुकुलानन्द-सातकमनि

राजा गोतमी-पुत्त सिरी-विजय-सातकनि

सातवाहनों में सबसे प्रमुख शासक शातकर्णी ने सर्वप्रथम मां का गोत्र लगाना प्रारम्भ किया। उत्तरोत्तर ये प्रथा चलती रही।



उपनिषद में मातृनाम

बृहदारण्यक उपनिषद में जो आरंभिक उपनिषदों में से एक है ।

आचार्यों और शिष्यों की उत्तरोत्तर पीढ़ियों की सूची मिलती है, जिसमें से कई लोगों को उनके मातृनामों से निर्दिष्ट किया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



एक सातवाहन राजा तथा उसकी पत्नी सातवाहन राजाओं की आकृतियां बहुधा उन गुफाओं की भित्तियों पर उत्कीर्ण की जाती थीं जिन्हें बौद्ध भिक्षुओं को दान में दिया जाता था। (200 ई. पूर्व की मूर्ति है)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- कुछ सातवाहन राजा बहुपत्नी प्रथा (अर्थात् एक से अधिक पत्नी)को मानते थे।
- सातवाहन राजाओं से विवाह करने वाली रानियों के नामों से यह इंगित होता है कि उनके नाम गौतम तथा वसिष्ठ गोत्रों से उद्भूत थे जो उनके पिता के गोत्र थे।
- इससे प्रतीत होता है कि विवाह के बाद भी अपने पति कुल के गोत्र को ग्रहण करने की अपेक्षा, जैसा ब्राह्मणीय व्यवस्था में अपेक्षित था, उन्होंने पिता का गोत्र नाम ही कायम रखा।
- यह भी पता चलता है कि कुछ रानियाँ एक ही गोत्र से थीं। यह तथ्य बहिर्विवाह पद्धति के नियमों के विरुद्ध था।

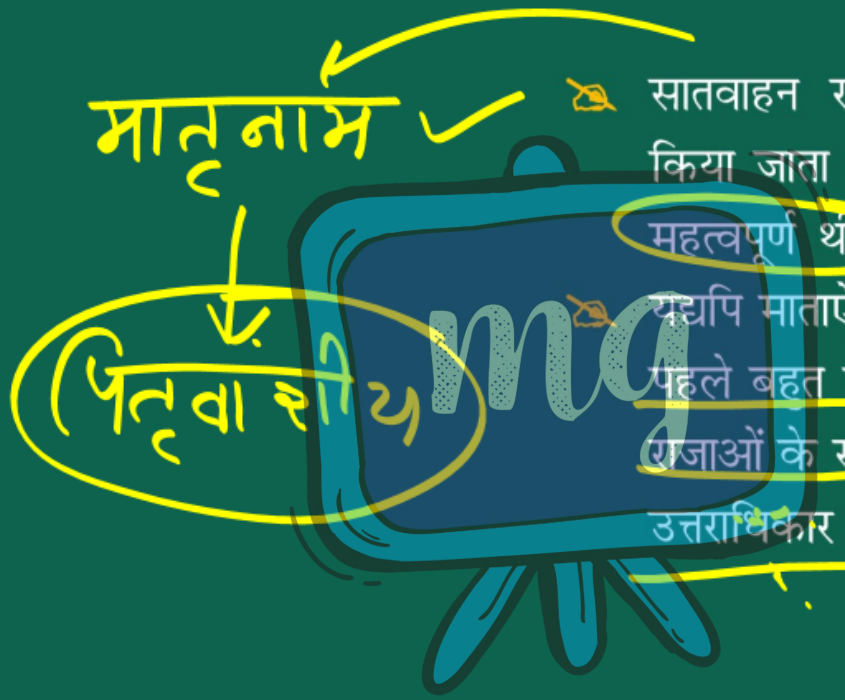
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

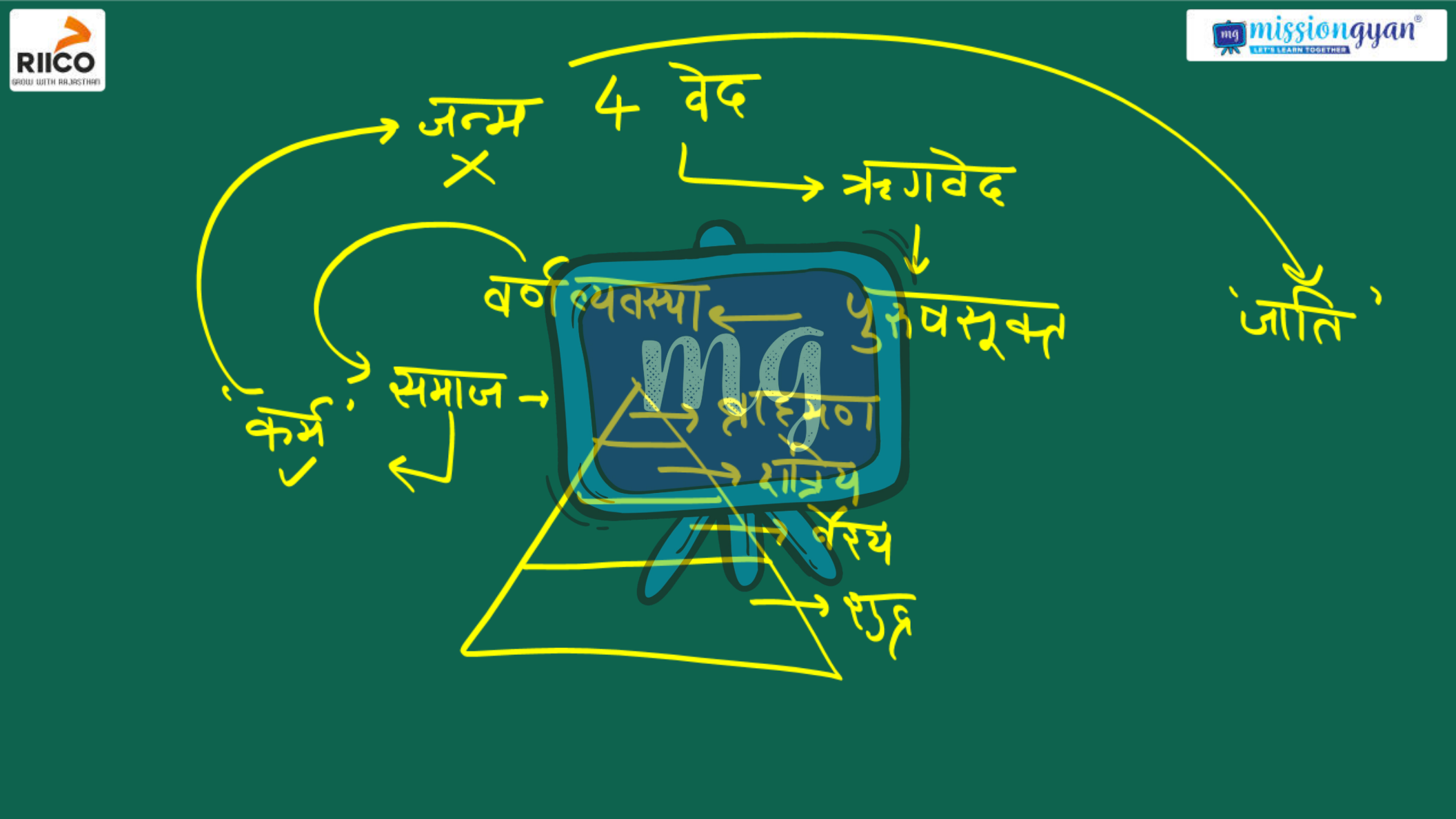


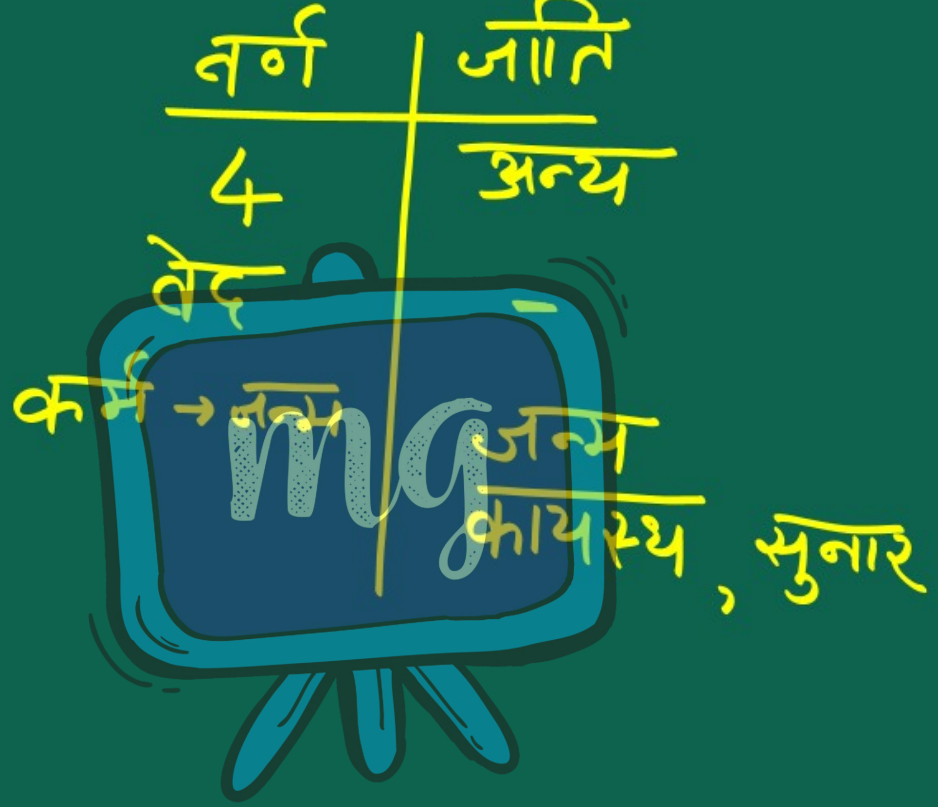
- वस्तुतः यह उदाहरण एक वैकल्पिक प्रथा अंतर्विवाह पद्धति अर्थात् बंधुओं में विवाह संबंध को दर्शाता है जिसका प्रचलन दक्षिण भारत के कई समुदायों में भी है।
- बांधवों के साथ जोड़े गए विवाह संबंधों की वजह से एक सुगठित समुदाय उभर पाता था।
- संभवतः उपमहाद्वीप के और भागों में अन्य विविधताएँ भी मौजूद थीं किंतु उनके विशिष्ट ब्योरों को पुनर्निर्मित करना संभव नहीं हो पाया है।

क्या माताएँ महत्वपूर्ण थीं?



- सातवाहन राजाओं को उनके मातृनाम से चिह्नित किया जाता था। इससे यह प्रतीत होता है कि माताएँ महत्वपूर्ण थीं।
- यद्यपि माताऐं महत्वपूर्ण होने के निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले बहुत सावधानी बरतनी होगी क्योंकि सातवाहन राजाओं के संदर्भ में हमें यह ज्ञात है कि सिंहासन का उत्तराधिकार पितृवंशिक होता था।


जन्म
X
4 वेद
ऋग्वेद
पुरुषसूक्त
वर्ण व्यवस्था
ब्राह्मण
क्षत्रिय
वैश्य
शूद्र
समाज
कर्म
जाति


वर्ण
जाति
4
अन्य
वेद
कर्म → जन्म
जन्य
कायस्थ, सुनार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सामाजिक विषमाताऐं

वर्ण व्यवस्था के दायरे में और उससे परे :-

- 'जाति' शब्द एक सोपानात्मक सामाजिक वर्गीकरण को दर्शाता है।
- धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में एक आदर्श व्यवस्था का उल्लेख किया गया था।
- ब्राह्मणों का यह मानना था कि यह व्यवस्था जिसमें स्वयं उन्हें पहला दर्जा प्राप्त है, एक दैवीय व्यवस्था है।
- शूद्रों और 'अस्पृश्यों' को सबसे निचले स्तर पर रखा जाता था।
- इस व्यवस्था में दर्जा संभवतः जन्म के अनुसार निर्धारित माना जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



'उचित' जीविका :-

- धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में चारों वर्गों के लिए आदर्श 'जीविका' से जुड़े कई नियम मिलते हैं।
- ब्राह्मणों का कार्य अध्ययन, वेदों की शिक्षा, यज्ञ करना और करवाना था तथा उनका काम दान देना और लेना था।
- क्षत्रियों का कर्म युद्ध करना, लोगों को सुरक्षा प्रदान करना, न्याय करना, वेद पढ़ना, यज्ञ करवाना और दान-दक्षिणा देना था।
- वैश्यों का कार्य - यज्ञ करवाना, दान दक्षिणा देने के साथ साथ कृषि, गौ-पालन और व्यापार का कर्म भी अपेक्षित था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- शूद्रों के लिए मात्र एक ही जीविका थी- तीनों 'उच्च' वर्णों की सेवा करना।
- इन नियमों का पालन करवाने के लिए ब्राह्मणों ने दो-तीन नीतियां अपनाई

1. उन्होंने बताया कि वर्ण व्यवस्था की उत्पनि एक दैवीय व्यवस्था है।
2. वे शासकों को यह उपदेश देते थे कि वे इस व्यवस्था के नियमों का अपने राज्यों में अनुसरण करें।
3. उन्होंने लोगों को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि उनकी प्रतिष्ठा जन्म पर आधारित है।

- यद्यपि ऐसा करना आसान बात नहीं थी। अतः इन मानदंडों को बहुधा महाभारत जैसे अनेक ग्रंथों में वर्णित कहानियों के द्वारा बल प्रदान किया जाता था।

वर्ण ⟹ क्षत्रिय ↘
राजा



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अक्षत्रिय राजा :-

- शास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय राजा हो सकते थे।,
- यद्यपि अनेक महत्वपूर्ण राजवंशों की उत्पत्ति अन्य वर्णों से भी हुई थी।
- मौर्य वंश के उद्भव पर गर्मजोशी से बहस होती है। बौद्ध ग्रंथ उन्हें क्षत्रिय बताते हैं जबकि ब्राह्मणीय शास्त्र उन्हें 'निम्न' कुल का मानते हैं।
- शुंग और कण्व जो मौर्यों के उत्तराधिकारी थे, ब्राह्मण थे।
- वस्तुतः राजनीतिक सत्ता का उपभोग हर वह व्यक्ति कर सकता था जो समर्थन और संसाधन जुटा सके।
- राजत्व क्षत्रिय कुल में जन्म लेने पर शायद ही निर्भर करता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- अन्य शासकों को, जैसे शक जो मध्य एशिया से भारत आए, ब्राह्मण मलेच्छ, बर्बर अथवा अन्यदेशीय मानते थे।
- किंतु संस्कृत के संभवतः आरंभिक अभिलेखों में से एक में प्रसिद्ध शक राजा रुद्रदामन (200 ई.) द्वारा सुदर्शन सरोवर के जीर्णोद्धार का वर्णन मिलता है। इससे यह लगता है कि शक्तिशाली मलेच्छ संस्कृतीय परिपाटी से अवगत थे।



शक शासक को चित्रित करता चांदी का सिक्का (लगभग 200 ई.)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- एक और दिलचस्प बात यह है कि सातवाहन कुल के सबसे प्रसिद्ध शासक गोतमी-पुत्त सिरी-सातकनि ने स्वयं को अनूठा ब्राह्मण और साथ ही क्षत्रियों के दर्प का हनन करने वाला बताया था। उसने यह भी दावा किया कि चार वर्णों के बीच विवाह संबंध होने पर उसने रोक लगाई। किंतु फिर भी रुद्रदामन के परिवार से उसने विवाह संबंध स्थापित किए। इस उदाहरण में देख सकते हैं, जाति प्रथा के भीतर आत्मसात होना बहुधा एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया थी। सातवाहन स्वयं को ब्राह्मण वर्ण का बताते थे जबकि ब्राह्मणीय शास्त्र के अनुसार राजा को क्षत्रिय होना चाहिए।


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- वे चतुर्वर्णी व्यवस्था की मर्यादा बनाए रखने का दावा करते थे किंतु साथ ही उन लोगों से वैवाहिक संबंध भी स्थापित करते थे जो इस वर्ण व्यवस्था से ही बाहर थे।
- वे अंतर्विवाह पद्धति का पालन करते थे न कि बहिर्विवाह प्रणाली का जो ब्राह्मणीय ग्रंथों में प्रस्तावित है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मातृनाम का इस्तेमाल किनके द्वारा किया जाता था?

Q. गोत्र के नियम क्या थे?

Q. क्या प्राचीनकाल मे जनतांत्रिय राज्य थे?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





जाति और सामाजिक गतिशीलता

- ये जटिलताएँ समाज के वर्गीकरण के लिए शास्त्रों में प्रयुक्त शब्द जाति से भी स्पष्ट होती हैं।
- ब्राह्मणीय सिद्धांत में वर्ण की तरह जाति भी जन्म पर आधारित थी।
- किंतु वर्ण जहाँ मात्र 4 थे वहीं जातियों की कोई निश्चित संख्या नहीं थी।
- जहाँ कहीं भी ब्राह्मणीय व्यवस्था का नए समुदायों से आमना-सामना हुआ –

उदाहरणत: जंगल में रहने वाले निषाद या फिर व्यावसायिक वर्ग जैसे सुवर्णकार, जिन्हें चार वर्णों वाली व्यवस्था में समाहित करना संभव नहीं था, उनका जाति में वर्गीकरण कर दिया गया।

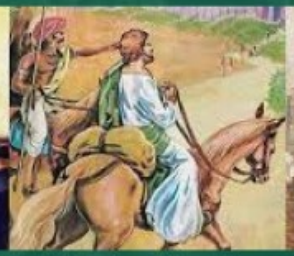
- वे जातियाँ जो एक ही जीविका अथवा व्यवसाय से जुड़ी थीं उन्हें कभी-कभी श्रेणियों में भी संगठित किया जाता था।

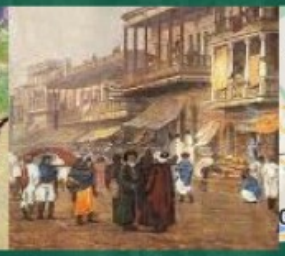
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

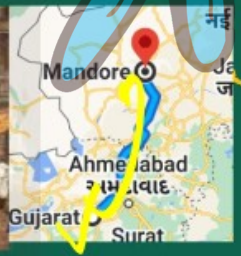
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER









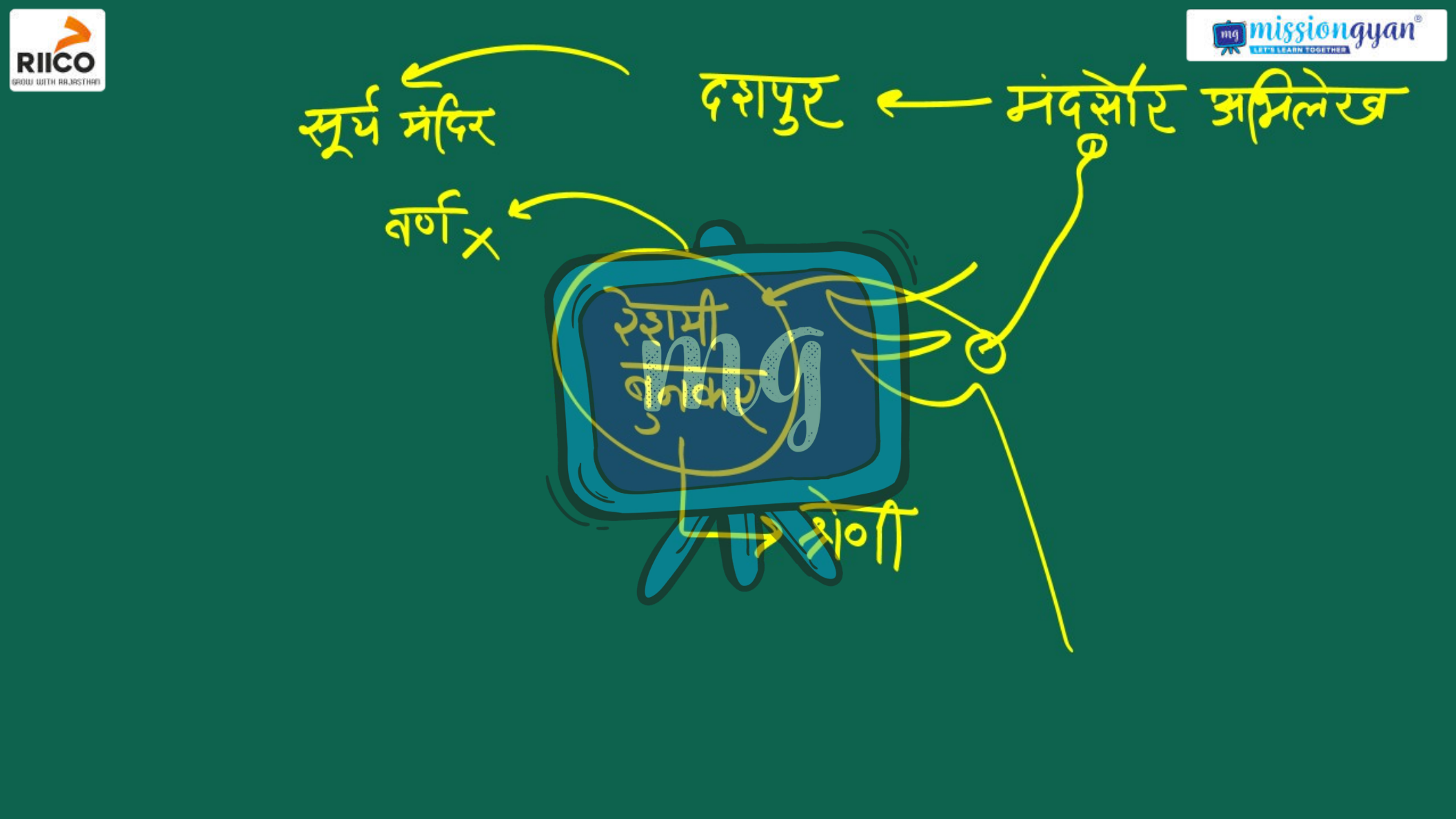


- हालाँकि इन समुदायों के इतिहास का लेखा-जोखा हमें कम ही प्राप्त होता है, किंतु कुछ अपवाद हैं जैसे कि मंदसौर (मध्य प्रदेश) से मिला अभिलेख (लगभग 500 ई.)।
- इसमें रेशम के बुनकरों की एक श्रेणी का वर्णन मिलता है जो मूलतः लाट (गुजरात) प्रदेश के निवासी थे और वहाँ से मंदसौर चले गए थे, जिसे उस समय दशपुर के नाम से जाना जाता था।
- यह कठिन यात्रा उन्होंने अपने बच्चों और बांधवों के साथ संपन्न की। उन्होंने वहाँ के राजा की महानता के बारे में सुना था अतः वे उसके राज्य में बसना चाहते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- यह अभिलेख जटिल सामजिक प्रक्रियाओं की झलक देता है तथा श्रेणियों के स्वरूप के विषय में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- हालांकि श्रेणी की सदस्यता शिल्प में विशेषता पर निर्भर थी जबकि कुछ सदस्य अन्य जीविका भी अपना लेते हैं।
- इस अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि सदस्य एक व्यवसाय के अतिरिक्त और चीजों में भी सहभागी होते हैं।
- सामूहिक रूप से उन्होंने शिल्पकार्य से अर्जित धान को सूर्य देवता के सम्मान में मंदिर बनवाने पर खर्च किया।


सूर्य मंदिर
दशपुर
मंदसौर अभिलेख
वर्ण x
रेशमी
बुनकर
श्रेणी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

9. मदर्सोर अभि॰1



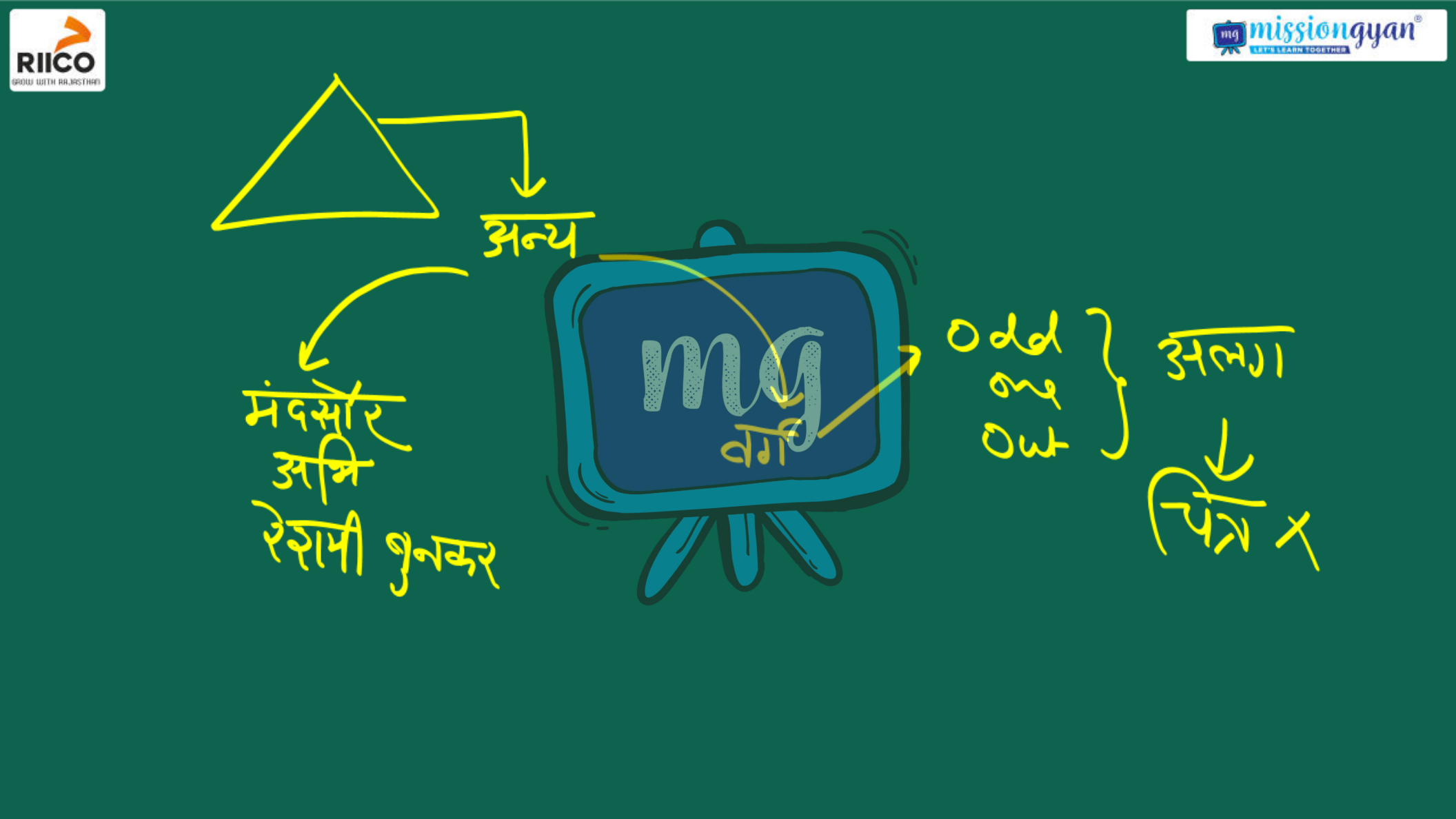
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



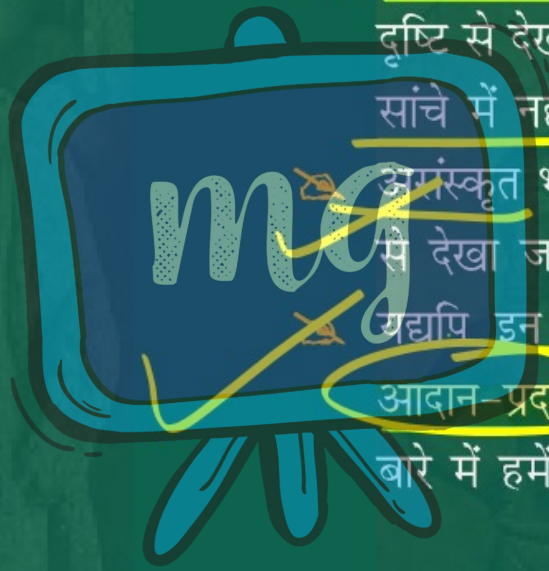
चार वर्णों से परे : एकीकरण

- उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली विभिन्नताओं की वजह से यहां हमेशा से ऐसे समुदाय रहे हैं जिन पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
- संस्कृत साहित्य में जब ऐसे समुदायों का उल्लेख होता है तो उन्हें विचित्र, असभ्य और पशुवत चित्रित किया जाता है।
- ऐसे कुछ उदाहरण वन प्रांतर में बसने वाले लोगों के हैं जिनके लिए शिकार और कंद मूल संग्रह करना जीवन निर्वाह का महत्वपूर्ण साधन था।
- निषाद वर्ग जिसका एकलव्य माना जाता था इसी का उदाहरण है।

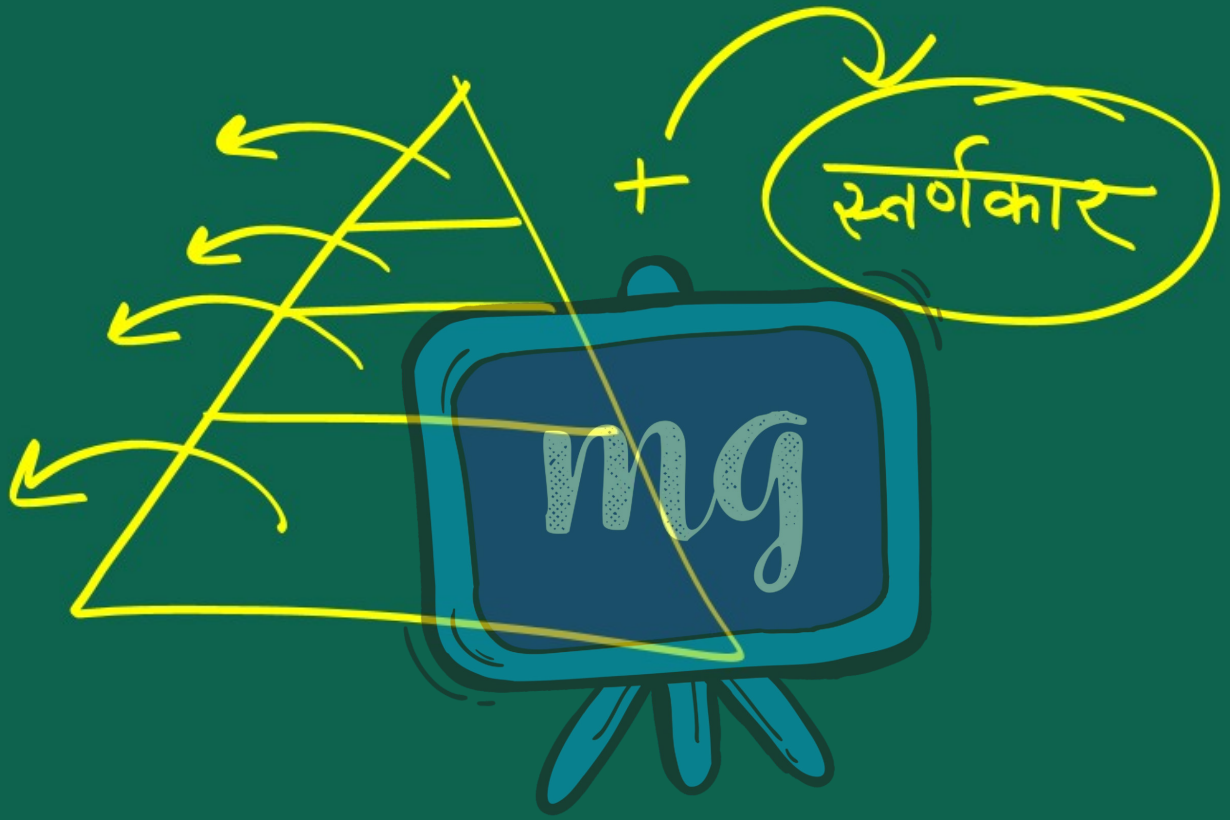

अन्य
मंदसौर
अग्नि
रेशमी बुनकर
mg
वर्ग
ठंडे
गर्म
अलग
चित्र x

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- यायावर पशुपालकों के समुदाय को भी शंका की दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि उन्हें कृषि कर्मियों के सांचे में नहीं ढाला जा सकता था।
- असंस्कृत भाषी लोगों को मलेच्छ कहकर हेय-दृष्टि से देखा जाता था।
- यद्यपि इन लोगों के बीच विचारों और मतों का आदान-प्रदान होता था। उनके संबंधों के स्वरूप के बारे में हमें महाभारत की कथा से ज्ञात होता है।


+
स्वर्णकार
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

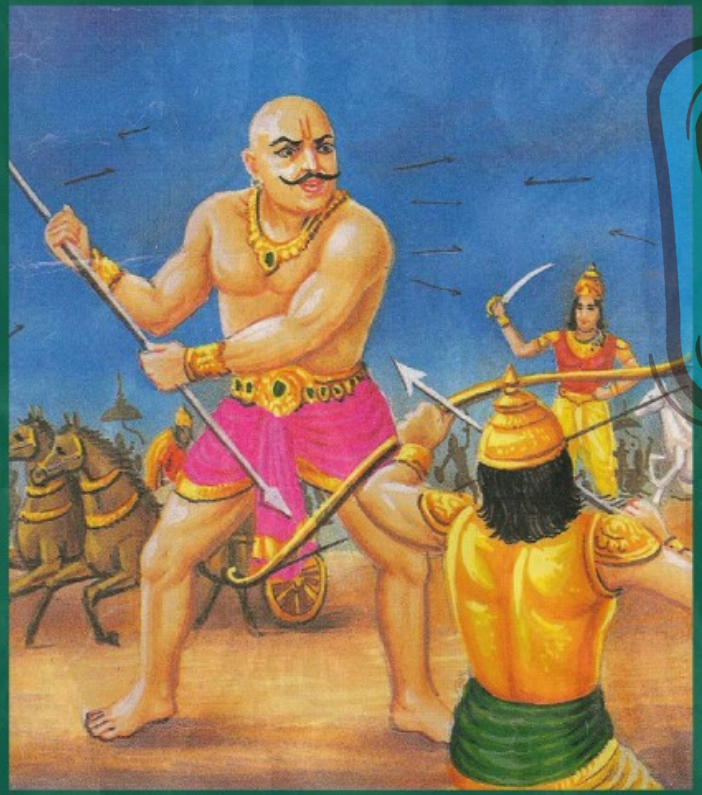
बाघ सदृश्य पति



यह सारांश महाभारत के आदिपर्वन से उद्धृत कहानी का है।

पांडव गहन वन में चले गये थे। थक कर वे सो गये। केवल द्वितीय पांडव भीम जो अपने बल के लिए प्रसिद्ध थे, रखवाली करते रहे।

एक नरभक्षी राक्षस को पांडवों की मानुष-गंध ने विचलित कर दिया और उसने अपनी बहन हिडिम्बा को उन्हें पकड़कर लाने के लिए भेजा। हिडिम्बा भीम को देखकर मोहित हो गई और एक सुंदर स्त्री के वेष में उसने भीम को विवाह का प्रस्ताव किया, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया।



इस बीच राक्षस वहां आ गया और उसने भीम को मल्ल युद्ध के लिए ललकारा। भीम ने उसकी चुनौती को स्वीकार किया और उसका वध कर दिया। शोर सुनकर अन्य पांडव जाग गये। हिडिम्बा ने उन्हें अपना परिचय दिया और भीम के प्रति अपने प्रेम से उन्हें अवगत कराया। वह कुंती से बोली।

"हे उत्तम देवी, मैंने मित्र, बान्धव और अपने धर्म का भी परित्याग कर दिया है और आपके बाघ सदृश पुत्र का अपने पति के रूप में चयन किया है.... चाहे आप मुझे मूर्ख समझें अथवा अपनी समर्पित दासी, कृपया मुझे अपने साथ लें तथा आपका पुत्र मेरा पति हो।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. हिडिम्बा कौन थी ?

Q. भीम किन शर्तों पर हिडिम्बा से शादी के लिए तैयार हुआ ?

Q. पाडवों को वन क्यूँ भेजा ?

अंततः युद्धिष्ठिर इस शर्त पर इस विवाह के लिए तैयार हो गए कि भीम दिनभर हिडिम्बा के साथ रहकर रात्रि में उनके पास आ जायेंगे।

यह दंपति दिनभर सभी लोकों की सैर करते। समय आने पर हिडिम्बा ने एक राक्षस पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम घटोत्कच रखा। तत्पश्चात् मां और पुत्र पांडवों को छोड़कर वन में चले गये किंतु घटोत्कच ने यह प्रण किया कि जब भी पांडवों को उसकी जरूरत होगी वह उपस्थित हो जायेगा।

कुछ इतिहासकारों का यह मत है कि राक्षस उन लोगों को कहा जाता था जिनके आचार-व्यवहार उन मानदंडों से भिन्न थे जिनका चित्रण ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुआ था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



चार वर्णों से परे : अधीनता और संघर्ष

- ब्राह्मण कुछ लोगों को वर्ण व्यवस्था वाली सामाजिक प्रणाली के बाहर मानते थे। साथ ही उन्होंने समाज के कुछ वर्गों को 'अस्पृश्य' घोषित कर सामाजिक वैषम्य को और अधिक प्रखर बनाया।
- ब्राह्मणों का यह मानना था कि कुछ कर्म खासतौर से वे जो अनुष्ठानों के संपादन से जुड़े थे, पुनीत और पवित्र थे, अतः अपने को पवित्र मानने वाले लोग अस्पृश्यों से भोजन नहीं स्वीकार करते थे।
- पवित्रता के इस पहलू के ठीक विपरीत कुछ कार्य ऐसे थे जिन्हें खासतौर से 'दूषित' माना जाता था। शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने वालों को चाण्डाल कहा जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मनुस्मृति में चाण्डालों के लिए निर्धारित कर्तव्यों का समालोचनात्मक परिक्षण करें?

- इन्हें वर्ण व्यवस्था वाले समाज में सबसे निम्न कोटि में रखा जाता था। वे लोग जो स्वयं को सामाजिक क्रम में सबसे ऊपर मानते थे, इन चाण्डालों का स्पर्श, यहां तक कि उन्हें देखना भी, अपवित्रकारी मानते थे।
- मनुस्मृति में चाण्डालों के 'कर्तव्यों' की सूची मिलती है। उन्हें गांव के बाहर रहना होता था। वे फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करते थे, मरे हुए लोगों के वस्त्र तथा लोहे के आभूषण पहनते थे। रात्रि में वे गांव और नगरों में चल फिर नहीं सकते थे। संबंधियों से विहीन मृतकों की उनहें अंत्येष्टि करनी पड़ती थी तथा वधिक के रूप में भी कार्य करना होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- चीन से आये बौद्ध-भिक्षु फा-शियन (500 ई.) का कहना है कि अस्पृश्यों को सड़क पर चलते हुए करताल बजाकर अपने होने की सूचना देनी पड़ती थी जिससे अन्य जन उन्हें देखने के दोष से बच जायें।
- एक अन्य चीनी यात्री श्वैन-त्सांग (लगभग 700 ई.) का कहना है कि वधिक और सफाई करने वालों को नगर से बाहर रहना पड़ता था।
- अब्राह्मणीय ग्रंथों में चित्रित चाण्डालों के जीवन का विश्लेषण करके इतिहासकारों ने यह जानने का प्रयास किया है कि क्या चाण्डालों ने शास्त्रों में निर्धारित अपने हीन-जीवन को स्वीकार कर लिया था?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यदा-कदा इन ग्रंथों के चित्रण और ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुए चित्रण में समानता है और कभी कभी एक भिन्न सामाजिक वास्तविकता का संकेत मिलता है।



Q. वर्ण से आप क्या समझते हैं?

Q. पितृवादियों के व्यवस्था की विशेषता बताईये?

Q. प्राचीन भारत की वर्ण व्यवस्था पर प्रकाश डालें?

Q. महाभारत की भाषा सामग्री की चर्चा करें?

Q. व्याख्या किजिए की आप कैसे सिद्ध करेंगें की महाभारत ग्रंथ गतिशील था?